

## अपोतिया मौत

ईस्टराइन इरालू

अनुवाद-अकील कैस

**अ** प्राकृतिक मौतें, जैसे पानी में डूबने से हुई मौत, बच्चे को जन्म देते हुए प्रसूता की मौत, युद्ध में लड़ते हुए हुई मौत और ऐसी ही अन्य कारणों से होने वाली मौतों की उसके खानदान में परंपरा ही बन गई थी। कुछ वैसे ही जैसे 'पुली' के खानदान को मिरगी का रोग पीढ़ी दर पीढ़ी ग्रसता आया था। मानो उसके खानदान का 'जीन' ही शापग्रस्त हो। उस खानदान का प्रत्येक नर बच्चा बढ़ते-बढ़ते जवान होता था और फिर जवानी की छाया मात्र बन कर रह जाता है।

मिरगी का दौरा पड़ने पर बेचारगी से छटपटाता, मुंह से झाग उड़ता, ज़मीन पर पड़ा पुली जब अंग-प्रत्यंग झटकने लगता था तो वह गांव के बच्चों के मनोरंजन का एक खिलौना ही बन जाता था। बच्चे खिलखिलाते हुए एक-दूसरे से कहते, "देखो न, सांप-नाच फिर शुरू हो गया है।" उनकी माएं उन्हें देख लेतीं तो उन्हें वहां से दूर खींच ले जातीं और बुरी तरह डांटने-डपटने लगतीं- "ऐसे लोगों पर कभी हंसा मत करो वरना तुम्हें भी वही रोग लग जाएगा।" बच्चे इस डांट-फटकार के बावजूद हंसते और पुली पर मिरगी के अगला दौरा पड़ने का इंतज़ार करते।

वियू, पुली का दोस्त था। 'था', क्योंकि जब यह स्पष्ट हो गया कि जवानी की दहलीज़ पर क़दम रखते ही पुली में उसके खानदानी रोग के लक्षण प्रकट होने लगे हैं तो उसके दोस्तों के मां-बाप ने इस डरावने रोग के छूत पकड़ने के डर से बच्चों को उसके साथ खेलने को मना कर दिया था।

वियू को पुली पर तरस आता था। उसकी उम्र ज़रा और चढ़ी तो उसे अक्सर ही एक दुविधा घेर लेती थी कि पुली के परिवार में चले आ रहे मिरगी-रोग की प्रबलता, जिसने उनके यहां मर्दों की तरुणाई ही हर ली थी, अधिक बुरी है या उसके अपने परिवार के अपोतिया मौतों का अभिशाप, जिसने घर के मर्दों का जीवन, ऐसे समय में जब वह अपने मधुरतम चरण में था, निगल लिया था।

वियू अपने दादा के बारे में कुछ नहीं जानता। पिता की यादें तो और भी क्षीण हैं। उसके दादा ने कमसिनी में ही ब्याह कर लिया था और फिर बस बाईस बरस की आयु में जब वे अपने परिवार के किसी भी पुरुष से कम उम्र के थे, चटपट दुनिया से विदा ले ली थी। उसके परदादा के सात बेटे थे। शादी के आठवें साल में उनकी पत्नी ने एक और बेटा जना तो वे बेहद खुश हुए। उनकी पत्नी के जब अगला गर्भ ठहरा, उसके पांचवें दिन, उन्होंने अपना भाला पजाया और जंगल की ओर चल पड़े। भाला चलाने में वे माहिर थे, बल्कि गांव में सबसे बढ़िया भाला चलाने वालों में से थे वे। उनकी आंखों में एक जवान हिरण बसा हुआ था, जिसे उन्होंने अक्सर फलों से लदे-फंदे गूज़बेरी के पेड़ पर मुंह मारते देखा था। उन्हें अधिक इंतज़ार नहीं करना पड़ा। लेकिन यह तो हवा से बातें करने वाला वह हिरण न था। यह तो कोई और भारी-भरकम जानवर था, जो झाड़ियों से अचानक तेज़ी से बाहर की ओर लपका था। इससे पहले कि वह जानवर भागे, उन्होंने अपना भाला तान लिया और शिकार के शरीर में घोंप देने के लिए सही मुद्रा ले ली।

शानदार बड़े-बड़े दांतों वाला भीमकाय वनैला सुअर था यह। भाला जहां लगा, उस घाव वाली जगह से खून की धार छलछलाती हुई फूट पड़ी। वेदना से गुराँते हुए उसने उन पर झपट्टा मारा। वियू के परदादा अपने सबसे नज़दीक वाले पेड़ की ओर भागे पर जानवर ने उन्हें लपेटे में ले ही लिया। उसके आकर्षक दांत उनकी जांघों के गुलगुले मांसल हिस्से में धुंभ गए और अगले ही क्षण वे हवा में कलाबाज़ियां खाने लगे। जब वे नीचे गिरे तो उन्हीं दांतों ने उनका पेट चीर दिया। उनके प्राण खोते मस्तिष्क ने अपने पटल पर जिस आखिरी चीज़ की तस्वीर अंकित की थी, वह थी बार-बार दांतों को उनके पेट में घुसेड़ते हुए हिंसक सूअर की मनके-सी चमकती आंखें। अगले दिन गांव वालों को वियू के परदादा और सूअर दोनों पास-पास मरे पड़े मिले। सूअर को तो टूकड़े-टूकड़े कर उन लोगों ने जंगल में ही गाड़ दिया क्योंकि आदमी की जान लेने वाले जानवर का मांस खाना उनके यहां निषिद्ध था, लेकिन वियू के परदादा को शोक-संतप्त लोग घर ले आए। तब उनकी उम्र कुल बत्तीस की ही तो थी।

बुजुर्गों ने इस घटना पर गहराई से सोचा-विचारा। मौत की तरह-तरह की किस्मों पर नज़र डाली और फिर इस ताज़ातरीन मौत को अपोतिया मौत घोषित कर दिया। इसके अनुसार शव को गांव के फाटक के बाहर दफ़नाना था।

सो वियू के परदादा को गांव की सीमा पर स्थित कंटीली झाड़ियों से घिरे क़ब्रिस्तान में दफ़नाया गया। वहां अपोतिया मौतों के शिकार ऐसे लोगों की पुरानी जर्जर क़ब्रें भी थीं जिन्हें मृत्यु के उपरांत निर्वासित कर दिया गया था और गांव के अंदर दो गज़ ज़मीन देने से मना कर दिया गया था। इस सामाजिक-बहिष्कार का बदला लेने ऐसे लोगों के भूत गांव वापस आते थे और असावधान व्यक्ति को दिक् करते थे।

शव दफ़ना दिए जाने के बाद जल्द ही गांव भर में खुसुर-फुसुर फैलने लगी थी। तड़के पानी भरने निकली एक बुढ़िया ने वियू के परदादा को खांसते सुना। दो दिन बाद सांझ के झटपुटे के समय, जब मुर्गे-मुर्गियों ने दड़बों में पनाह ले ली थी, तो पड़ोस के एक गांव से लौटते समय क़ब्रिस्तान के पास से एक नवयुवक गुज़रा। गर्मी के मौसम की तप्त शाम थी वह और उसके मेज़बान ने उसे तीन दिन पुरानी शराब पिलाई थी। शराब इतनी जोरदार थी कि सबसे आदी पियक्कड़ों ने भी इसका लोहा मान लिया था। जब वह नौजवान लड़खड़ाता हुआ नई क़ब्र के पास से गुज़र रहा था, तो दो पंजे उसकी गर्दन से आ लगे और उनका कसाव उसकी छटपटाहट के साथ-साथ बढ़ता चला गया। नौजवान का नशा हिरन हो गया। उसने चिल्लाने की जी-तोड़ कोशिश की। जब उसका शरीर लुंज-सा पड़ने लगा तो गांव के कुते भौंकते हुए उस शत्रु-छाया पर टूट पड़े। और इस तरह जिस आकस्मिकता से उस पर उन पंजों का हमला

हुआ था, उसी तेज़ी से वह उसके चंगुल से मुक्त भी हो गया। वह सिर पर पैर रख घर की ओर भागा और उस 'चीखे' को दरवाजे पर ही दे मारा और कसम खाई कि फिर कभी तीन दिन पुरानी दारू मुंह से नहीं लगाएगा। बुजुर्गों ने इस घटना के बारे में सुनकर कहा-“अपोतिया-मृत्यु के शिकार बने लोग हकीकत में मरते नहीं। वे जीवित लोगों के जीने से उपजे ईर्ष्या-भाव से भरे, भटकते रहते हैं।”

वियू के दादा छः बरस के थे जब उनके पिता को दफ़नाया गया था। एक बुजुर्ग ने मंतव्य दिया-“शाप है यह।” ‘थिमूमिया’ यानी गांव के ओझा ने सहमति प्रकट करते हुए कहा-“यह शाप चार पीढ़ियों तक चलता रहता है तब जाकर इससे मुक्ति मिलती है।”

उनके सातों बेटे उस शाप की शाश्वत छाया में ही पले-बढ़े। क्या यह कोई करिश्मा था कि उनमें से चार जवानी तक पहुंचने के बाद युद्ध में मरे? पांचवां अपने साथियों के साथ शिकार करने को गया तभी नालमुख वाली बंदूक अचानक चल पड़ी और उसकी कनपटी छेदते हुए पार हो गई। वह तो वहीं ढेर हो गया। इन नौजवानों की क़ब्र बन जाने पर बाड़ से घिरा पूरा क़ब्रिस्तान, खोद कर निकाली गयी ताज़ा मिट्टी की गंध से देर तक महकता रहा था।

छठे बेटे के युवावस्था में प्रवेश का अनुष्ठान जब संपन्न कराया जा रहा था तो ओझा ने चेताया-“यह रस्म ठीक से नहीं पूरी की गई, इसलिए उसे पानी के पास मत जाने देना।”

छठा बेटा बहुत सतर्क रहता। ‘खेती-बाड़ी’ का काम शुरू करने के पहले दिन की सुबह उसकी मां ने कहा, “तुम्हें काम से वापस लाना मेरी ज़िम्मेदारी नहीं है- पर मैंने एक बुरा सपना देखा है। मैंने एक बड़ी झील देखी जिसकी एक ओर मैं और दूसरी ओर तुम हो। न तो मैं झील पार कर तुम्हारे पास जा पा रही हूँ और न तुम मेरे पास आ पा रहे हो। बेटे, सावधान रहना। ये जो विचित्र सपने हमें आते हैं, वे अकारण ही नहीं आते।”

‘मैं कोई अनावश्यक ख़तरा नहीं लूंगा, अजुओ।’ उसने मां को आश्वस्त करते हुए कहा।

खेती का पहला दिन हमेशा खास होता था। दिन का पहला हिस्सा काम में लगाया जाता था, पर दोपहर के उतार के समय बड़े लोग नौजवानों को आमतौर ढील दे देते थे और आधा दिन यूं ही बेकार गुज़ारने की छूट दे देते थे। नवयुवक इस दौरान शोर मचाते हुए मिट्टी-कादो का खेल खेलते रहते, यह जानते हुए भी कि इस समय के पूरे काम की भरपाई हफ़्ते के बचे दिनों में उन्हें ही करनी होगी। शाम जब चिश्चरों के बोलने की आवाज़ गूंजने लगी तो बड़ों ने एलान किया-“आज का काम ख़त्म, अब घर चलो” और कीचड़ से सने

नौजवान खेतों से निकल कर झुंड में अपने साथियों के कंधों पर हाथ डाले और कुछ तन्हा ही राह-रास्ते को अपने कहकहों से गुंजार करते नदी की ओर चल दिए। नौजवानों ने पानी की धारा में आगे बढ़कर अपने-अपने नहाने का स्थान चुना।

गर्मी का मौसम था। जिस गहरे स्थान पर वे नहाने के लिए गए थे, वहां एक माह से बारिश का पानी आ रहा था। वे साफ पानी में घुसकर एक-दूसरे से स्पर्द्धा करने लगे कि कौन दूसरे को पानी में पहले डुबोता है। इस खेल में उनमें से एक की छटपटाहट का उन लोगों को अहसास ही नहीं हुआ। वे जीवन की उमंग में इतना बह गए थे कि उन्हें पता ही नहीं चला कि उनका एक साथी उसी जीवन की मिठास को पकड़े रखने को कितनी छटपटाहट भरी कोशिश में लगा था- ज़िन्दगी का हाथ से यूँ फिसलते जाना कितना नागवार लगा था उसे।

जब वे उसका शव ले घर लौटे तो दिन भर के कहकहों को विराम लग चुका था। ऊपर आसमान धूसर हो गया था क्योंकि दिन की उस बेला में सूरज डूब चुका था और तारे आकाश के पूरे विस्तार को भर देने के लिए प्रकट नहीं हुए थे। बुजुर्गों को इसे अपोतिया मौत करार देने में कोई दुविधा नहीं हुई। और इस तरह, ज़मीन फिर खोदी गई और बाड़ से घिरे उस कब्रिस्तान में एक ताज़ा टीला बन गया।

वियू के दादा सत्रह साल के थे जब उनके बड़े भाई पानी में डूबने से मरे। वियू की परदादी का तो हौसला ही टूट गया। हमेशा की तरह औचक ही, पीड़ा से भरा आघात लेकर प्रकट होती अपोतिया मौतों ने उन्हें असमय ही बुढ़ा दिया था। सो वे अपने बेटे-यानी वियू के दादा को अपनी नज़र से कभी दूर नहीं होने देती थीं। पिता और भाई के न होने से 'मर्द' होने की ज़िम्मेदारी विरासत में वियू के दादा के गले आ पड़ी। समय से पूर्व ही, सत्रह की उम्र में ही उन्हें जवान मान लिया गया। उनके साथी जिन खेलों का आनंद उठाते थे, उनके लिए उनके पास समय नहीं था। खेत, जहां वे और उनकी मां काम में जुटे रहते, उनका सारा समय भकोस जाते थे।

जब वे उन्नीस के हुए तो उनकी मां ने कहा-“शादी करना अच्छी बात है। इससे आदमी अनुशासित हो जाता है।” फिर वह अपने घर एक दुल्हन ले आई जो घर के काम-काज में खूब सुघड़ थी।

उनके बेटे, यानी वियू के पिता जन्म के समय मुश्किल से पांच पाउंड के थे हालांकि उनका कंठ भारी था। उन्हें जन्म देने में उनकी मां को कोई परेशानी नहीं हुई। चिमड़ी-सी, नन्ही-सी जान। लेकिन बहुत चपल-चंचल। इससे उनके क़द और वज़न की कमी की भरपाई हो गई थी। उनके ढाई साल के होते-होते, उनकी मां के गर्भ में दूसरा शिशु कुलबुलाने लगा था। एक दिन दरवाज़े पर शरीर टिकाते हुए वह बोली

थी-“अबकी लड़की ठीक रहेगी। इस लड़के को पकड़ने की कोशिश में दौड़ते-दौड़ते मैं थक गई हूँ।” इस बार उसे अलग-सा अनुभव भी हो रहा था। पानी लेकर घर आते हुए उसकी सांसें फूलने लगतीं और शरीर भारी हो उठता।

एक दिन जब दोपहर काफ़ी उतर चुकी थी, उसकी प्रसव वेदना शुरू हो गई। शाम के भोजन से पहले ही लोगों ने दाई को बुला भेजा। दाई विस्तर पर उसकी बगल में बैठती हुई आत्मविश्वास से बोली-‘अब ज़्यादा देर नहीं लगेगी’। लेकिन प्रसव कठिन हो लंबा खिंच गया। वेदना रह रहकर हूल मारने लगी। प्रसविनी ने रुलाई रोकने की पूरी कोशिश की मगर पीड़ा की तीव्रता के सामने वह बेबस हो गयी। रात ऐसे ही बीत चली। लेकिन आधी रात होते-होते सब की चिंता उफान मारने लगी। उसे तेज़ ज्वर चढ़ आया था। दाई ने उसके पति को ठंडा पानी लाने भेजा, ताकि ज्वर उतारा जा सके। बुखार फिर भी बढ़ता ही गया। उसके कपड़े छूनेभर से लोगों के हाथ जल उठते थे। सुबह मुर्गे की पहली बांग के साथ ही उसने एक ज़ोर का निःश्वास छोड़ा, फिर एक लम्बी आह भरी और शांत हो गई। क्या बुखार अंततः उसे छोड़ गया? लोगों ने उसका माथा छू कर देखा। वह ठंडा और चिपचिपा हो चुका था। शोक से आहत उसका पति तो अपनी सुध ही खो बैठा। पर दाई ने समझाया-‘इहाप्री’ मौत पर मातम करना मना है।’ विवश, तकिया मुंह से लगाकर उसमें ही चीखता रहा वह। अपनी पीड़ा की आवाज़ रोकने का बस यही तरीका उसे मालूम था।

‘कोई मातम नहीं होगा,’ बुजुर्गों ने भी कहा, ‘इहाप्री को बुनी हुई चटाई में लपेट दो और दीवार में एक नया रास्ता बनाकर इसे बाहर ले जाओ और कब्र में उसे उछाल कर फेंक दो। याद रखो, कब्र पर कोई स्मृति-चिह्न रहे। पक्की कब्र मत बनाओ। यह सब मना है क्योंकि ‘इहाप्री मौत’ अपोतिया मौतों में सबसे घृणित मौत है। भूलना मत, शव मुख्य प्रवेश द्वार से नहीं जाएगा। इसके लिए एक नया द्वार बनाओ।’ इस तरह सूर्यास्त के बाद, प्रसूति के समय बच्चे को जन्म दिए बगैर मरी औरत की अंत्येष्टि से संबद्ध सभी निषेधों का अनुपालन करते हुए उसे दफ़ना दिया गया।

वियू के दादा अपोतिया मौत से नहीं मरे थे। शाप मानो उनकी पत्नी को ग्रस कर ही संतुष्ट हो गया था। पर इससे वे इतने टूट गए थे कि वे आहिस्ता-आहिस्ता मरने लगे। शायद इसकी वजह यह थी कि उन्हें मातम करने से रोक दिया गया था। उनका शोक, अनभिव्यक्त और बाहर निकलने को अननुमत, अंतर्मुखी हो गया और उन्हें दिन प्रतिदिन अंदर ही अंदर खाने लगा। आखिर एक सुबह जब लोगों ने उन्हें जगाने की कोशिश की तो उन्होंने पाया कि अब वे कभी नहीं जागेंगे।

1. जो स्त्री प्रसूति के समय मर गई हो

वियू के पिता अपनी दादी के हाथों पले-बढ़े-उनके इकलौते बेटे और इकलौते पोते भी वही थे। मृत्यु के अंतिम सत्य को करीब से जानने वाली स्त्री का कड़ा संरक्षण उन्हें प्राप्त था। वही उनकी मां भी थी और बाप भी। एक मजबूत औरत-जो बखूबी जानती थी कि अगर जीवन कठिन हो तो जीने का मंत्र है स्वयं को और अधिक कठोर बना लेना। जब वह 'न' कह देती थी तो बेटे को मालूम था कि ज़िद करना बेकार है। पर वही दादी कभी-कभी नीचे झूलती पेड़ की शाखाओं से सावधानीपूर्वक निकाल कर चिड़िये का घोंसला और कभी 'पफूनों' यानी हरा 'भृंग' कीड़ा ले आती। लड़के इनसे घंटों खेल सकते थे। तब उन्हें अपनी दादी अपने प्रकृति से अलग, कोमल हृदयी मालूम होती। वे इसी कोमलता की एक झलक देख पाने की उम्मीद में खेत से दादी के जल्द लौट आने की राह देखते रहते।

दादी पोते के यौवनारंभ की रस्म के मामले को टालती रही। पर एक दिन लड़के के पिता के चचेरे भाई का धैर्य जवाब दे गया और वे इस बात को लेकर फट पड़े-‘उसे ‘ज़नाना’ बना दोगी क्या तुम? लड़के की उम्र निकली जा रही है।’ आखिरकार पूरे एक साल की देरी से पवित्रीकरण के त्योहार के अवसर पर उनका यौवन-प्रवेश अनुष्ठान संपन्न किया गया।

पेली<sup>२</sup> के काम के पहले दिन अपने सम-वयस्कों के साथ, उन्हें गांव के आधे रास्ते में दादी को अपने इंतज़ार में खड़ा देख खुशी और आश्चर्य हुआ। उसने उनका फावड़ा अपनी टोकरी में धर लिया और उन्हें साथ लिए घर लौटी। पर कुछ हफ्तों के बाद उन्हें दादी को इस तरह रास्ते में खड़ा देख बुरा लगने लगा क्योंकि लोग इस बात को लेकर उनकी खिल्ली उड़ाने लगे थे। अब उनके साथियों में से सबकी यौवन-प्रवेश की रस्म पूरी हो चुकी थी और अपना-अपना काम समाप्त कर घर सुरक्षित लौटने की ज़िम्मेदारी निभाने के लिए उन्हें आज़ाद छोड़ दिया गया था। पर वियू की परदादी ज़िद्दी थी। रस्म पूरी होने के छः माह बाद भी अपनी कुटिया के दरवाज़े पर वह तब तक खड़ी रहती जब तक वह पोते को अपने साथियों के साथ रास्ते में लौटते हुए नहीं देख लेती। उनकी एक झलक पाते ही वह फुर्ती से घर के भीतर गायब हो जाती और अपने काम में लग जाती। पोते को कभी पता भी नहीं चल पाता कि वह उसके लिए कितना बेचैन रही है। लेकिन उसे लगता था कि वह पोते को जितना अधिक स्वयं से बांधती है, उतना ही ज़्यादा वह कसमसाता और उनसे दूर हुआ जाता है।

जैसा कि उसने वियू के दादा के लिए किया था, वियू के पिता के लिए भी वह उनके बीस की उम्र छूते ही एक दुल्हन ले आई। वह तो

2. नवयुवाओं के जीविकोपार्जन हेतु काम आरंभ करने के पहले दिन किया जाने वाला अनुष्ठान

लगभग ज़िन्दगी से बेफ़िक्र ही हो चली थी जब उसके पोते के तीन बच्चे हुए- एक सुंदर मोटा-ताज़ा बच्चा और दो काले बालों वाली बेटियां।

वियू के पिता ने अपनी दादी को अपनी शादी के साढ़े चार साल बाद दफनाया। वह संतुष्ट मन से मरी, जीवन से परास्त हो जाने का भय अब उसे कचोटता न था। इस प्रकार ईश्वर की दया से अपने खानदान में 'शाप' के एक बार फिर प्रकट हो जाने के संज्ञान और उसकी यातना से वह बच गई। वियू के पिता उस अभाग परिवार की तीसरी पीढ़ी के थे, पर उनकी दादी उनके और उस शाप के बीच दीवार बन कर इस मजबूती से खड़ी हो गई थी कि उसके जीते जी मौत को भी उसके पोते को छूने की हिम्मत नहीं हो पाई। उसके मरने के बाद के हफ्तों और महीनों में जो बातें उन्होंने दादी से सीखी थीं वे उन्हें याद आने लगीं। उन्होंने हर पाठ को पूरी तरह अपनाए रखा। 'सावधान रहा करो,' वह हमेशा ताकीद किया करती, 'लापरवाही ही तुम्हारे दादा और चाचा लोगों की मौत का कारण बनी।' दूसरे मौके पर वह कहती, 'मजबूत बनो। अगर तुम्हारी आत्मा मजबूत होगी तो तुम अपने भाग्य को भी नियंत्रित कर सकोगे।' वे मजबूत बनने और सतर्क रहने का संकल्प लेते। वे ऐसा कोई काम हाथ में न लेते जिसमें जीवन जाने का लेश मात्र भी खतरा हो। वे बस अपने बच्चों के पिता बने रहना चाहते थे और अपनी पत्नी के पति। इसमें ग़लत भी क्या था?

अगले साल उन्होंने अपने खेतों में एक सीढ़ीदार खेत और बढ़ा लिया क्योंकि उनकी पत्नी उम्मीद से हो गई थी और वे एक अतिरिक्त पेट पालने के प्रबंध की ज़िम्मेदारी के अहसास से भर गए थे। चूंकि प्रसव का समय निकट था, इसलिए एक दिन उन्होंने पत्नी से ज़िद की कि वह पहले ही खेत से घर लौट जाए। उन्होंने पत्नी को आश्वस्त किया कि वे स्वयं भी रात उतरने से पहले लौट आएंगे। वह अनिच्छा से घर लौट गई, पर जब वे रात होने तक नहीं आए तो वह और इंतज़ार नहीं कर सकी। पड़ोसियों से उसने मिन्नतें की कि वे लोग जाकर उसके पति को खोजें। खेत बहुत दूर तो नहीं था पर रास्ता दिखाने के लिए बांस की मशाल का ही सहारा था और इसलिए वहां जाना एक मुश्किल और धीमा काम था। लोगों को वे चौराहे पर मिले जहां बबूल का एक पेड़ खड़ा था। वहां बिजली गिरी थी और पेड़ की बजाए उसने उन्हें ही अपना शिकार बना लिया था। आखिर उन्हें अपने दादा की कब्र के बराबर जगह मिली और चूंकि यह मानसून का समय था, कब्र के टीले पर एक हफ्ते में ही हरी काई जम गई थी।

वियू ने ये सारी कहानियां सदा चुप रहने वाली अपनी मां से नहीं सुनी थीं। उसने ये कहानियां अपनी नानी के मुंह से सुनी थीं जिसके ज़िम्मे उसकी विधवा मां बाहर खेत पर जाते समय उसे छोड़ जाती थी। जब वह बच्चा था तो वह सोचा करता था कि मौत कब आएगी और

यह भी कि क्या इसकी स्पष्ट पूर्व घोषणा की जा सकती है, जैसा कि उसके दादा के मामले में की गई थी। अब वह सोचने लगा था कि इन पुरानी कहानियों को मन में क्यों ढोया जाए? विशेष कर तब, जब उसने लड़कों के शौक की जगह मर्दों के खेल अपना लिए थे, जब औरतों की नज़रें उसका पीछा करने लगी थीं और जहां वह खड़ा होता, उनकी आंखें उससे निरंतर चिपकी रहतीं। हाल ही में जब उसने गांव के पहलवान को पछाड़ दिया था, तो उसकी फुर्ती के चर्चे हर ज़बान पर थे। जब जीवन रूपी आनंददायिनी सुरा की मिठास उसके



कंठ में छलकी पड़ रही थी तो अब उन सबके बारे में क्यों सोचे वह? कल वह यह सिद्ध करने जा रहा था कि वह अपने हमउम्र नौजवानों के पत्थर खींचने के समारोह की भी अगुवाई करने योग्य मर्द बन चुका है। अब उसके पास दूसरी बातों के बारे में सोचने का समय नहीं था।

जब मुर्गे ने सुबह दूसरी बांग भरी तो वियू के हमउम्र नौजवान नियत स्थान के लिए रवाना हो गए। इस अनुष्ठान के लिए जो पत्थर इस्तेमाल होना था, वह आदमी की लंबाई से दुगुना था और उसका व्यास छः फीट का था। नियमानुसार नौजवानों ने अपने रस्से पत्थर से बांध लिए और उसे खींचने लगे। एक छोटी ढाल पर चढ़ने तक तो उनको कठिनाई का पहले से ही अनुमान था पर उसके बाद तो अंततक ढलान ही ढलान थी। सौभाग्य की बात थी कि वह ढलान उनकी यात्रा के शुरू में ही थी जिससे उनकी शक्ति के शुरू में ही चुक जाने की आशंका नहीं थी। पहाड़ी पर चढ़ना आसान नहीं था तो मुश्किल भी नहीं था। पौन किलोमीटर के बाद उनका निश्चय उनकी शक्ति से मिलकर पत्थर को ढलान के शिखर तक खींच लाने में कामयाब हो गया। अधिक उम्र वाले जवान पत्थर के पीछे हो गए क्योंकि वे जानते थे कि पहाड़ी की ढलान पर की यात्रा में पीछे वालों द्वारा पत्थर पर संतुलित खिंचाव बनाए रखना ज़रूरी था ताकि पत्थर की गति धीमी रहे और वह लुढ़कता हुआ नीचे टकरा कर टूट न जाए। सामने खड़ा वियू उन मुश्किल पद-ताल के बारे में सोच रहा था जिन पर गांव के

निकट पहुंचने पर विजय-नृत्य में वह थिरकता।

बाद में, कोई यह बता पाने की स्थिति में नहीं था कि गलती क्या और कैसे हुई। सबकुछ जैसे अचानक घटित हुआ। वियू ने अपने दोस्तों की चिंतित, भय-त्रस्त पुकारने की आवाज़ सुनी। उस समय वह रास्ते में फंसा खड़ा था। जब पत्थर उससे बाल बराबर दूरी पर आ पहुंचा तो उसने अपनी चीख खुद सुनी। पत्थर ने उसे इतने जोर से धक्का मारा कि उसे लगा कि वह उस पत्थर का ही अंश बन गया है और वह खंड-खंड हो गया है। वह और पत्थर, भूसे की तरह साथ-साथ उछलते-गिरते नीचे चले आए थे।

एक और अपोतिया! इसके लिए बुजुर्गों के निर्णय की ज़रूरत नहीं थी। वियू को गांव के बाहर अपने पिता के बराबर ही दफना दिया गया और वह शाप अपना क्रम पूरा कर वियू के परिवार के लोगों या उनके बच्चों के बच्चों को दिक् करने फिर नहीं आया।

(ईस्टर्न इरालू लब्धप्रतिष्ठ नागा कवियित्री व कथाकार हैं। अब तक 3 उपन्यास व 2-2 कहानी /कविता संग्रह प्रकाशित हैं)

□□

अकील कैस

द्वारा श्री योगेश कुमार

बी-11-25, यू.डी.पी. कालोनी,

नेहरू नगर, नई दिल्ली-110065